

---

shrI subrahmaNyagadyaM

श्रीसुब्रह्मण्यगद्यम्

Document Information

---

Text title : shrI subrahmaNyagadyaM

File name : subragadya.itx

Category : gadyam, subrahmanya, stotra

Location : doc\_subrahmanya

Transliterated by : Antaratma antaratma at Safe-mail.net

Proofread by : Antaratma antaratma at Safe-mail.net

Latest update : October 7, 2005

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

## श्रीसुब्रह्मण्यगद्यम्




पुरहरनन्दन रिपुकुलभञ्जन, दिनकरकोटि रूप  
परिहृतलोकताप, शिकीन्द्रवाहन महेन्द्रपालन  
विधृतसकलभुवनमूल विधुतनिखिलदनुजतूल  
तापससमाराधित पापजविकाराजित,  
कारुण्यसलिलपूराधार मयूरवरवाहन महेन्द्रगिरिकेतन,  
भक्तिपरगम्य, शक्तिकररम्य, परिपालितनाक,  
पुरशासनपाक,, निखिललोकनायक,  
गिरिविदारिसायक, महादेवभागधेय,  
विनतशोकनिवारण, विविधलोककारण, सुरवैरिकाल  
पुरवैरिबाल, भवबन्धनविमोचन,  
दळदंबुजविलोचन, करुणामृतरससागर,  
तरुणामृतकरशेखर, वल्लीमानहारवेष  
मल्लीमालभारिकेश, परिपालितविबुधलोक,  
परिकालितविनतशोक, मुखविजितचन्द्र,  
निखिलगुणमन्दिर, भानुकोटिसदृशरूप  
वितृमनोहारिमन्दहास, रिपुशिरोदारिचन्द्रहास,  
श्रुतिकलितमणिकुण्डलरुचिविजित रविमण्डल,  
भुजवरविजितसाल भजनपरमनुजपाल, न  
ववीरसंसेवित रणधीर संभावितमनोहरशील  
महेन्द्रारिकील, कुसुमविशदहास कलशिखरनिवास,  
विजितकरणमुनिसेवित विगतमरणजनिभाषित,  
स्कन्दपुरनिवास नन्दनकृतविलास, कमलासनविनत  
चतुरागमविनुत, कलिमलविहीन कृतसेवन  
सरसिजनिकाशशुभलोचन, अहार्यानरधीर  
अनार्यानरदूर, विदळित रोगजाल, विरचितभोगमूल


भोगीन्द्रभासित योगीन्द्रभावित, पाकशासनपरिपूजित  
नाकवासिनिकरसेवित, विद्रुतविद्याधर,  
विद्रुमहृद्याधर, दळितदनुजवेतण्ड,  
विबुधवरदकोदण्डपरिपालितभूसुर,  
मणिभूषणभासुर, अतिरम्यस्वभाव,  
श्रुतिगम्यप्रभाव, लीलाविशेषतोषितशङ्कर,  
सुमसमरदन शशधरवदन विजयीभव! विजयीभव!  
॥ इति सुब्रह्मण्यगद्यं संपूर्णम् ॥

Encoded and proofread by  
Antaratma antaratma at Safe-mail.net

---

——  
*shrI subrahmaNyagadyaM*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

